अयोध्यासिंह उपाध्याय ' हरिऔध '

साहित्यिक परिचय

हरिऔध जी का जन्म 15 अप्रैल सन 1865 में निजामाबाद (आजमगढ) में हुआ था । पिता का नाम भोलासिंह उपाध्याय माता का नाम रुक्मिणी देवी था । स्वाध्याय से इन्होने हिंदी अंग्रेजी फारसी संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर कर लिया । अध्यापक , कानूनगो , अवैतनिक शिक्षक के रूप में काम करते हुए एवं हिन्दी माता की सेवा करते हुई 6 मार्च सन् 1947 ई ० को पंचतत्व में लीन हो गए ।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हरिऔध जी ने गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में हिंदी माता की सेवा की । हरिऔध जी ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्यरचना करके यह सिद्ध कर दिया कि उसमें भी ब्रजभाषा के समान खड़ी बोली की कविता में भी सरसता और मधुरता आ सकती है ।

इनमें एक श्रेष्ठ कवि के समस्त गुण विद्यमान थे । ' उनका प्रियप्रवास ' महाकाव्य अपनी काव्यगत विशेषताओं के कारण हिंदी महाकाव्यों में ' माइलस्टोन- ' माना जाता है । ' निराला ' के शब्दों में -'इनकी यह एक सबसे बड़ी विशेषता है कि ये हिंदी के सार्वभौम कवि हैं । खड़ी बोली , उर्दू के मुहावरे , ब्रजभाषा , कठिनसरल सब प्रकार की कविता की रचना कर सकते हैं ।

कृतियाँ-

हरिऔध जी मूलतः कवि ही थे, उनके उल्लेखनीय ग्रंथ निम्नलिखित हैं
काव्य ग्रंथ-

1. प्रिय प्रवास – 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' प्राप्त हरिऔध जी का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रंथ है । खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है ।

2. कवि सम्राट

3.वैदेही वनवास

4.पारिजात

5.रसकलश

6. चुभते चौपदे ,

7.चौखे चौपदे

8.ठेठ हिंदी का ठाठ

9.अधखिला फूल

10 . रुक्मिणी परिणय

11 . हिंदी भाषा और साहित्य का विकास ,

12. बाल साहित्य- बाल विभव, बाल विलास, फूल पत्ते, चन्द्र खिलौना , खेल तमाशा उपदेश कुसुम, बाल गीतावली, चाँद सितारे, पद्य- प्रसून ।